1 प्रभुजी तुम चंदन हम पानी

रैदास

(जन्म : सन् 1388 ई., निधन : सन् 1518 ई. अनुमानित)

संत कवि रैदास कबीर के समकालीन महान संत थे । रैदास को रविदास के नाम से भी जाना जाता है । यह माना जाता है कि संत रामानंदजी के शिष्यों में से एक थे । ये काशी में रहते थे । पढ़े-लिखे नहीं थे, मगर उनकी साधना उच्च प्रकार की थी ।

उनके पदों में अनन्य भक्तिभाव की अभिव्यक्ति है । संत कवि रैदास ने भक्त और भगवान के अटूट संबंध की पुष्टि अपने पदों में की है । आत्मा-परमात्मा का मिलन सोने में सुगंध की भाँति उत्तम बतलाया है । उनके पद बहुत लोकप्रिय हैं । उनके कुछ पद गुरुग्रंथ साहब में संग्रहीत हैं । बोलचाल की सरल सहज भाषा में दो सौ से अधिक पद हैं ।

यहाँ संकलित पद में रैदास कहते हैं कि प्रभुजी मैं हरहाल में आपके निकट रहता हूँ । मुझे आपकी भक्ति से प्रभुमय बनना है । मैं आपका दास आपकी प्रतीति चाहता हूँ । यहाँ आत्मा और परमात्मा की अद्वैतता वर्णित है ।

प्रभुजी तुम चंदन हम पानी ।
जाकी अंग अंग बास समानी ।
प्रभुजी तुम घन बन हम मोरा ।
जैसे चितवत् चंद चकोरा ।
प्रभुजी तुम दीपक हम बाती ।
जाकी जोति बरै दिन-राती ।
प्रभुजी तुम मोती हम धागा ।
जैसे सोनहिं मिलत सुहागा ।
प्रभुजी तुम स्वामी हम दासा ।
ऐसी भक्ति करै रैदासा ।

शब्दार्थ

बास बू, गंध **मोरा** मोर **घन** बादल **बरै** जले **दासा** दास **सुहागा** एक तरह का खनिज पदार्थ **चकोर** एक पक्षी जो चंद्र की ओर देखता है **चितवत्** देखना

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) प्रभु चंदन है तो भक्त क्या है ?

(2) भक्त दीपक बनकर क्या चाहता है ?

(3) सोने का महत्त्व कब बढ़ता है ?

2. निम्नलिखित प्रश्न के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) भक्त किन-किन उदाहरणों द्वारा समझाता है कि मैं प्रभु के निकट हूँ - अपने शब्दों में लिखिए ।

3. उचित जोड़े बनाइए :

'अ'	'ब'
चंदन	मोरा
घन बन	ज्योति
दीपक	पानी
सोना	रैदासा
भक्त	सुहागा

योग्यता-विस्तार

- रैदास के अन्य पद संकलित कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- रैदास के पद एवं गुरुनानक के पद की तुलना कीजिए ।
- निरालाजी की 'तुम और मैं' कविता का गान करें और समझाइए ।